# कला के माध्यम से कहानी कहना

अभिलाषा अवस्थी

कहानियों में बच्चों को मज़ा आता है और उनके ज़रिए वे पात्रों की दुनिया में सहजता से प्रवेश कर जाते हैं। जब कहानी कहने के लिए कला को चुना जाता है तो वह इस प्रक्रिया को गहरा कर सकती है और बच्चों के मन पर ऐसी छाप छोड़ सकती है कि वे एक लम्बे समय तक उस कहानी के साथ रह सकते हैं क्योंकि कला के माध्यम से किया गया संवाद भावपूर्ण और संवेदनात्मक होता है। कला के माध्यम से कहानियाँ सुनाने की इस प्रक्रिया में बच्चों को शामिल करने के अनेक तरीक़े हैं।

## जब एक बच्चा कहानी सुनाने के लिए कला का प्रयोग करता है

**चित्र-1** में बच्ची अपनी ड्रॉइंग के माध्यम से एक कहानी कहना चाहती है। यह 'पाँच मुँह वाली' (छात्रा के द्वारा ही दिया गया नाम) पेंसिल उसकी ड्रॉइंग में दिख रही है। उसका कहना था कि चूँकि उसकी यह पेंसिल 'पेड़' थी, सो अगर उसकी एक नोक टूट भी जाती, तो उसके स्थान पर दूसरी उग आती - यह भाषा द्वारा सम्भव हुआ। इस कलाकृति के इर्द-गिर्द लिखी गई कहानी अब लड़की की दुनिया की गहरी समझ हासिल करने का एक द्वार खोलती है। उसकी यह कहानी पेंसिल के साथ उसके अनुभव से बनी है और जिसे वह अपनी कल्पना के सहारे एक अलग मोड़ देती है। यही नहीं, इस कलाकृति में प्रयुक्त विभिन्न रंग इस कल्पना को यूँ सँजोते हैं कि उसकी भावनाएँ और उसकी रंगत काग़ज़ पर उतर आते हैं और यह रेखांकन उसकी कल्पना का एक अधिक मूर्त उत्पाद बन जाता है।

## जब शिक्षिका बच्चों को कहानी बनाने में मदद करने के लिए कला का उपयोग करती है

अपनी कहानियों को कला के माध्यम से व्यक्त करते वक़्त बच्चे कहानी को परिभाषित करने के लिए शब्दों, वाक्यांशों और अवधारणाओं के बारे में सोचना शुरू

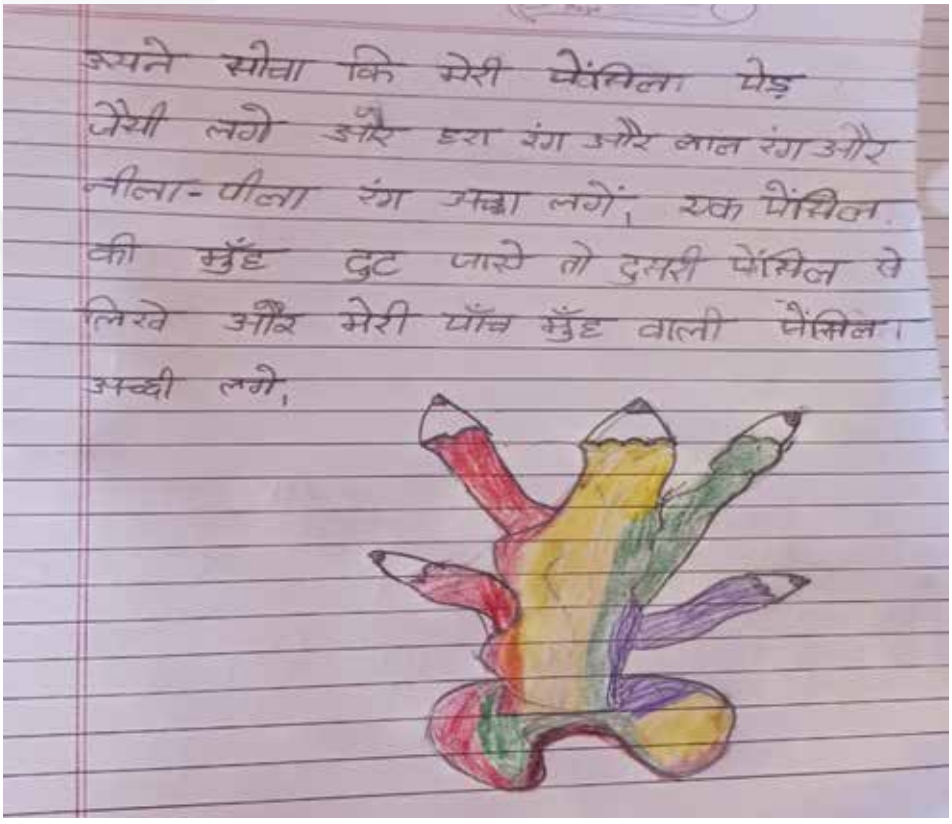


***चित्र-1 :*** *एक छात्रा की कल्पना में एक अनोखी पेंसिल।*

कर देते हैं। इसमें एक मौजूदा कलाकृति के द्वारा कक्षा में कहानी सुनाता शिक्षक भी अपना योगदान दे सकता है। कोई कलाकृति दिखाते समय शिक्षिका बच्चों से इस बारे में बात करने के लिए कह सकती है कि वे क्या देखते हैं या अनुभव करते हैं, जैसे कि यहाँ क्या हो रहा है? लोग क्या कर रहे हैं? वे कैसा महसूस कर रहे हैं? क्या रंग कुछ बोल रहे हैं?

ऐसे सवाल पूछे जाने पर बच्चे विभिन्न सम्भावनाओं के बारे में सोचने लगते हैं। वे जो कहानी बुनते हैं उसमें तर्क की गुंजाइश होती है और यह तर्क इन्हीं निर्देशात्मक प्रश्नों से आता है जो मनोदशा, तारतम्य, घटनाक्रम आदि की ओर इंगित करते हैं।

इसके अलावा, इस कला की विविध व्याख्याएँ हो सकती हैं। कोई भी सही या ग़लत नहीं होता; उत्तर सम्भावनाओं की एक विस्तृत रंगोली में समाए होते हैं, विभिन्न औचित्यों के अनुकूल होते हैं। अपना दृष्टिकोण देते हुए शिक्षक भी इस प्रक्रिया में भागीदार बनते हैं। **चित्र-2**, **3** और **4** कक्षा में दिखाई गई हवाई जहाज़ वाली पेंटिंग पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ हैं। उस पेंटिंग में एक बड़ा पेड़, कई लोग, जानवर और पक्षी भी थे।

कहानियों से हमें चीज़ों को विभिन्न कोणों से देखने में मदद मिलती है। जब हम किसी कहानी को प्रस्तुत करने के लिए किसी कलाकृति का उपयोग करते हैं और कहानी में दृष्टिकोण पेश किए जाते हैं, तो हमारी कल्पना का उपयोग करने के

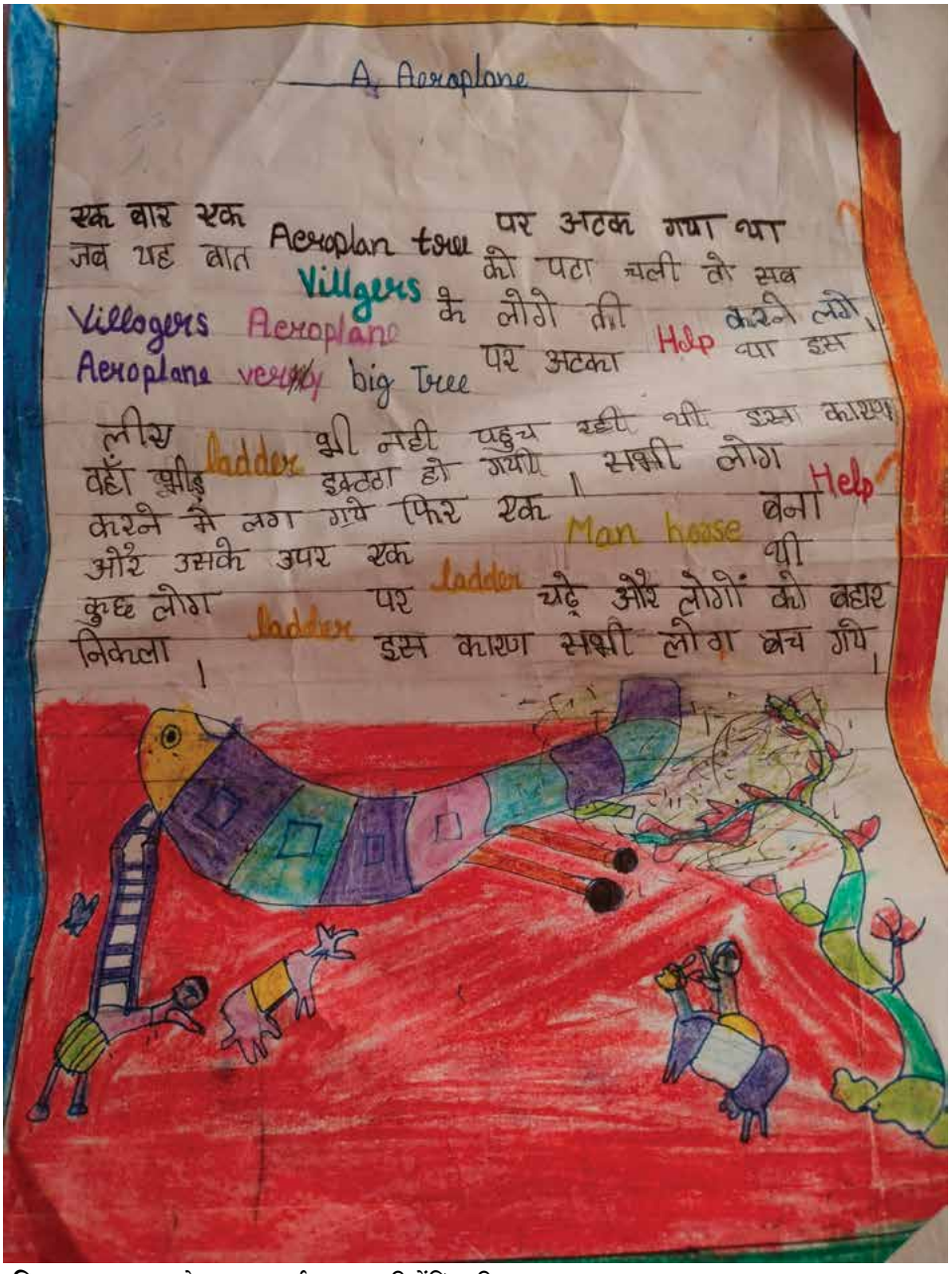


***चित्र-2 :*** *एक छात्र के द्वारा 'हवाई जहाज़' की पेंटिंग की व्याख्या।*

कई तरीक़े सामने आ सकते हैं। **चित्र-1** में, हम देखते हैं कि बच्चे ने एक पेड़ के रूप में ख़ुद की कल्पना करके एक अलग ही दृष्टिकोण अपनाया है। ऐसी नुमाइन्दगी कहानी को और ज़्यादा निजी बनाती है। **चित्र-2** में, जब हवाई जहाज़ पेड़ पर होता है तो बच्चा पेड़ की भावनाओं का वर्णन करता है। यहाँ, व्याख्याओं की ऋणी होने के नाते कलाकृति ऐसी सम्भावना को जन्म देती है जिसमें बहुगुना दृष्टिकोणों के ज़रिए इसका अन्वेषण करते हुए रचनात्मक रूप से सोचने के अनेक रास्ते खुलते जाते हैं।

बच्चों के ये ब्योरे जताते हैं कि वे अपनी कहानी में तर्क गढ़ रहे हैं। **चित्र-2**, कलाकृति में दिखाई देने वाले उस मानव-घोड़े के महत्त्व को उजागर करता है जिसने सबको बचाया। **चित्र-3** में दिखाई गई कहानी, कहानी में एक और पात्र (नायक) जोड़ती है, जिससे कहानी का नज़रिया पूरी तरह से बदल जाता है। **चित्र-3** में दर्ज अवलोकन का एक अन्य तत्व चित्र के चारों ओर पसरे उन छोटे तत्वों पर एकाग्र होता है जो कहानी का मिज़ाज बदल सकते हैं। कुत्ते और गाय के छोटे-छोटे ब्योरों से कहानी में रहस्य का तत्व आता है। यह सूक्ष्मतम विवरण के आस-पास सम्भावना की एक महीन रेखा का चित्रांकन करते बच्चे की एक मिसाल के बतौर कार्य करता है। जब सभी पात्रों का अध्ययन समान गहनता से किया जाता है, तो यह कहानी के संशोधन के अलग-अलग रास्ते खोल सकता है और कहानी की अन्य सम्भावनाएँ तलाशने का आग्रह कर सकता है।

## जब बच्चे कहानी में सांस्कृतिक ज्ञान की परत चढ़ाने के लिए कला का उपयोग करते हैं

बच्चों को बाघ की पेंटिंग दिखाई गई (पश्चिम बंगाल का एक पट्टचित्र) जिसमें दिखाया गया है कि बाघ के दो शरीर और एक सिर है। **चित्र-5** में, एक बच्चे ने चित्र की विवेचना की है और फिर इस पर एक कहानी बुनते हुए, बाघ का मानवीकरण किया गया और उसकी उलझन को सामने लाया गया है जब उसे पता चलता है कि वह तो अपनी परछाईं से ही लड़ रहा है। कुछ बच्चों ने जब चित्र को देखा तो उन्हें लगा कि बाघ का चेहरा सूरजमुखी के बिन्दुओं से बना है या उसकी जीभ, छिपकली की जीभ सरीखी है। दरअसल, ये उनके अपने सांस्कृतिक परिवेश के निहितार्थ हैं।

बच्चे का चित्र (**चित्र-5**) बड़े बाघ की छवि से हटकर बकरियों पर एकाग्र होता है। यह कलाकृति में दिखाई देने वाले पात्र के चारित्रिक महत्त्व को बदल देता है और बच्चा यहाँ अपनी दृष्टि ले आता है। बकरियों को खा जाने की बाघ की प्रवृत्ति को नाटकीय ढंग से उजागर किया गया है। कहानी का शीर्षक बच्चे द्वारा कहानी में इन पात्रों को दिए गए महत्त्व को दर्शाता है। इसीलिए, कहानी बनाने के लिए कला पिछले सांस्कृतिक ज्ञान को याद करने और उसे लागू करने की सम्भावना प्रदान करती है।

## कहानी कहने के फ़ायदे

- जब कला को एक माध्यम के बतौर प्रयोग में लाया जाता है, तो अपनी कहानियाँ बुनने के लिए बच्चों को तार्किक

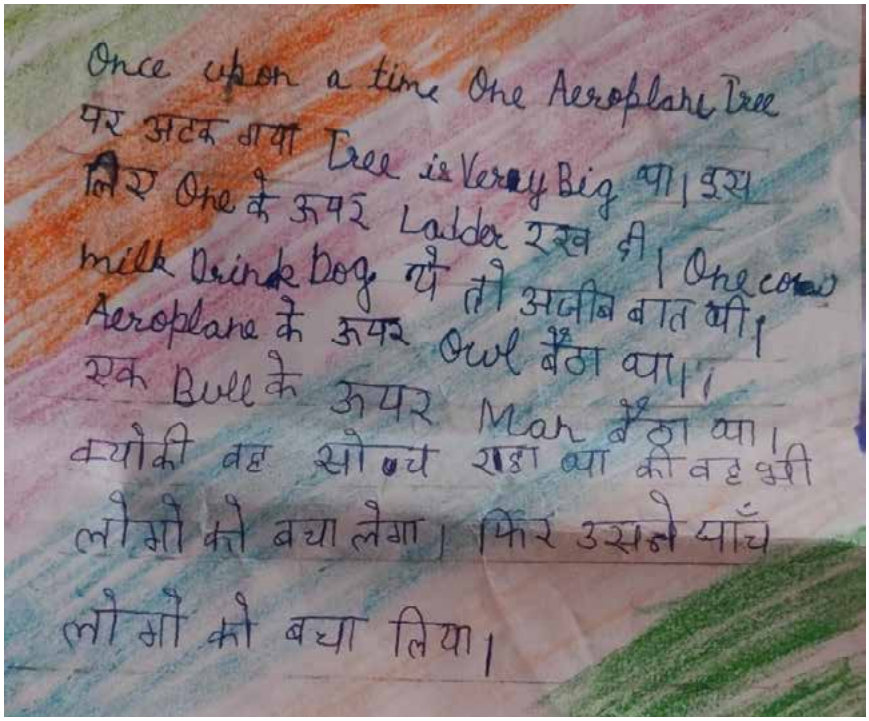


***चित्र-3 :*** *'हवाई जहाज़' पेंटिंग पर एक अन्य छात्र द्वारा बनाई गई एक कहानी।*

सोच पर दृढ़ भरोसा करना पड़ता है। नतीजतन, इससे अनुक्रम का अनुशासन बढ़ता है जो कि एक वांछित सीख है। कला बच्चों को पात्रों या परिदृश्य को देखने में अधिक कल्पनाशील बना सकती है क्योंकि उस कृति में प्रचुर सम्भावनाएँ निहित होती हैं। इससे बच्चों में रुचि जगने के साथ-साथ कहानी याद रखने में भी उन्हें मदद मिलती है।

- जब कोई बच्चा किसी कलाकृति के माध्यम से अपनी कहानी व्यक्त करता है तो उसे एक परिप्रेक्ष्य देने की कोशिश में, भाषा का प्रयोग पूरक बन जाता है। यह उसे सार्थक और दिलचस्प भी बनाता है।

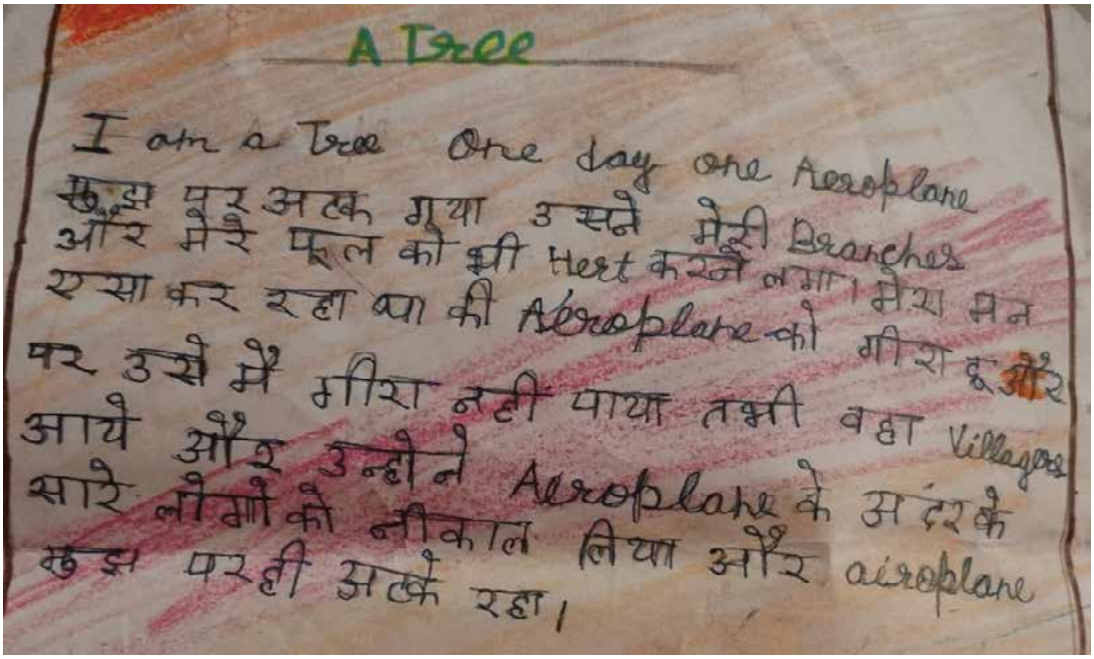


***चित्र-4 :*** *'हवाई जहाज़' पेंटिंग पर एक छात्र की कल्पना की एक और मिसाल।*

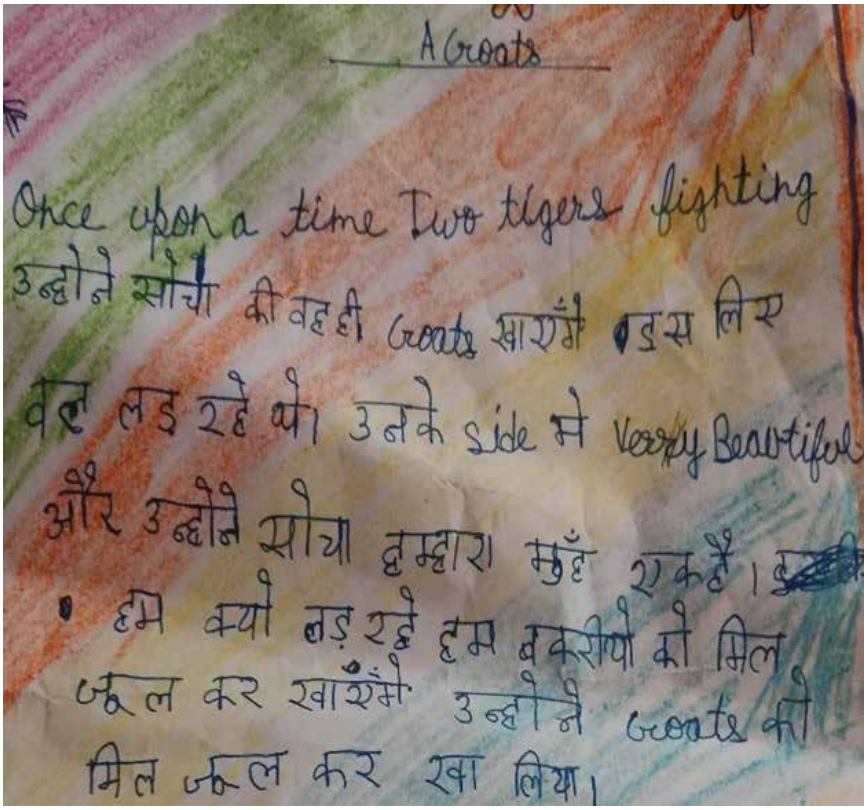


***चित्र-5 :*** *कक्षा में दिखाई गई 'बाघ' पेंटिंग पर एक छात्र की कहानी।*

- कहानी के मिज़ाज, लहजे, कथाक्रम और परिवेश के निर्माण के दौरान उनके द्वारा कलाकृति के इंगितों - रंग, तकनीक, अभिव्यक्ति के उपयोग से उनका पूर्वानुमान कौशल और ज़्यादा निखर आता है।

## कक्षा में कलाकृति का प्रयोग

कक्षा में कलाकृति का उपयोग करते समय शिक्षक इन उद्देश्यों को ध्यान में रख सकते हैं :

क. किसी कलाकृति का उपयोग करते समय, बच्चे कहानी के विभिन्न तत्वों (तर्क, ढाँचे, जीवन-मूल्यों, नज़रियों, पात्रों और कथानक) का विकास कर सकते हैं।

ख. किसी कलाकृति की व्याख्या से भाषा की ज़रूरत पैदा हो सकती है।

किसी कलाकृति के माध्यम से कहानी पढ़ाने से अटकलों की व्यापक सम्भावनाएँ खुलती हैं। जब बच्चे किसी पेंटिंग को देखते हैं, तो वे कलाकृति में दिखाई देने वाले विभिन्न तत्वों की पड़ताल करते हुए तर्क का निर्माण कर सकते हैं। कुछ सम्भावनाएँ प्रस्तुत की जा सकती हैं और उनकी तार्किक व्याख्याओं पर चर्चा की जा सकती है। कक्षा द्वारा किसी भी कलाकृति की कहानी का अध्ययन शुरू करते वक़्त उसकी सम्भावनाएँ अनन्त होती हैं।

अगला क़दम यह हो सकता है कि बच्चे कलाकृति से प्रेरित होकर अपनी ही एक कहानी विकसित करें। उन्हें इस कहानी के लिए शब्दावली, यानी नामों, रंगों इत्यादि की आवश्यकता होती है। भाषा सीखने के उद्देश्य से, इसमें वाक्य विन्यास शामिल किए जा सकते हैं, उदाहरण के लिए, 'वहाँ एक _____ था'।

अगले चरण में आगे बढ़ते हुए, उन्हें निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर कलाकृति पर कहानी लिखने की एक रूपरेखा दी जा सकती है :

क. कहानी का मिज़ाज क्या है?

ख. घटनाक्रम क्या है?

ग. कितने पात्र हैं? उनके नाम क्या हैं? उनकी विशेषताएँ क्या हैं?

घ. कहानी कहाँ घटित हो रही है?

ड. क्या कहानी में कोई संघर्ष भी है? इसका समाधान कैसे किया जाता है?

फिर, कहानी के बारे में लिखने के बाद उनसे इसे चित्र के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है। उनके द्वारा चुने गए कलात्मक विकल्प उन तत्वों को परिभाषित करेंगे जिन्हें वे सामने लाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, यदि वे एक ग़ुस्सैल कछुआ दिखाते हैं, तो वे उसके हाव-भाव उसी हिसाब से दर्शाएँगे भी। ठीक इसी तरह, उनके द्वारा चुने रंग भी उस रंगत को बढ़ाएँगे जिसका ज़िक्र उन्होंने अपनी कहानी में किया होगा।

## निष्कर्ष

कुल मिलाकर, जब हम कहानी कहने के लिए कला का उपयोग करते हैं, तो यह बच्चों के दिमाग़ पर एक मज़बूत छाप छोड़ती है, ख़ासकर उन सीखने वालों के दिमाग़ पर जो मौखिक कहानी के चित्रांकन के साथ बेहतर सीखते हैं। कला का उपयोग न केवल सम्भावनाओं की एक विशाल खिड़की खोलता है बल्कि कल्पनाओं को प्रखर व पुष्ट करने के लिहाज़ से अपरम्परागत तर्क की जगह भी बनाता है। चूँकि कला एक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है, सो बच्चे बहुलवाद के बारे में सीखते हैं और कलाकृति पर अपनी-अपनी सांस्कृतिक व्याख्याएँ लागू करते हैं।

***आभार***

*लेखिका, शासकीय प्राथमिक शाला, सैंधर की हेमा पाण्डे और शासकीय प्राथमिक शाला, बिरौरा की पूनम शाह के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हैं, जिन्होंने इस लेख के लिए अपने विद्यार्थियों की रचनाएँ साझा कीं।*

**अभिलाषा अवस्थी** अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन की रिसोर्स पर्सन हैं। उन्हें ड्रॉइंग करना, पढ़ना और यात्रा करना अच्छा लगता है। उनसे *abhilasha.awasthi@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

**अनुवाद :** मनोहर नोतानी **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडीटिंग :** अनुज उपाध्याय